

## समय सबसे बलवान है

मनोज सतीजा\*

समय चाहे अनुकूल परिस्थितियों को प्रतिकूल बना दे और ये चाहे तो प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बना दे। पूरी सृष्टि समय के चक्र के अनुसार चलने के लिए विवश है। यह समय ही था जब रावण ने भक्ति से कैलाश पर्वत को उठा लिया। यह समय ही था जब रावण का अन्त हुआ राक्षस कुल का अन्त हुआ, लंका भस्म हुई। यहाँ तक की भगवान को भी समय के सामने आनेकों बार झुकना पड़ा है। यह समय का ही चक्र था मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को राजपाट छोड़ कर वनवास का जीवन व्यतीत करना पड़ा। यह समय का ही फेर था कि संसार को गीता का ज्ञान देने वाले श्रीकृष्ण का अपना पुत्र साम उनका विरोधी रहा फिर मानव तो सदा ही समय के समक्ष नतमस्तक रहा है, लेकिन इतना होने पर भी यह भी सत्य है कि वह समय के साथ संघर्ष करने को हमेशा तत्पर रहा है। कोरोना काल में हमें यह प्रत्यक्ष रूप से यह प्रमाणित होते दिखा है।

मानव जीवन में परिश्रम तो सभी करते हैं लेकिन ये समय का चक्र ही होता है जो एकसमान शिक्षित, योग्य व परिश्रमी व्यक्तियों के बीच अमीरी गरीबी की रेखा खिंच जाती है, सफलता और असफलता की दूरी हो जाती है, सही समय में सही निर्णय लेने पर सफलता के मार्ग खुल जाते हैं, तो सही समय पर सही निर्णय ना लेने पर जीवनभर की कसक रह जाती है। यह बात सत्य है कि समय को कोई भी बांध नहीं सकता। वैदिक काल से लेकर आज वर्तमान समय तक ऐसे अनेकानेक उदाहरण हमारे सामने हैं जहाँ समय के समक्ष ज्ञान, विज्ञान, शक्ति, और साहस ठहर नहीं पाए। यह समय का चक्र ही तो था जब सम्पूर्ण विश्व एक साथ अपने-अपने घरों में ही बन्द हो गया, जब जंगलों में रहने वाले जीव जन्तु शहरों में विचरण करते दिखने लगे। यह समय का ही चक्र होता है जब प्राकृतिक विपदा किसी देश द्वारा अर्जित वर्षों के विकास को कुछ ही मिनटों में तबाह कर उसे पुनः पीछे धकेल देती है। प्रश्न यह उत्पन्न होते हैं कि क्या व्यक्ति को सब कुछ समय पर ही छोड़ देना चाहिए, यह सोचकर कि जब समय सही आउगा तो अपने आप ही सब ठीक हो जायेगा या फिर परिस्थितियों के समक्ष हार मान कर बिना समीक्षा के चुपचाप बैठ जाना चाहिए या फिर हमें संघर्षरत रहना चाहिए। वास्तव में हमें समय को सहेज कर रखना चाहिए, इसे संजो कर रखना चाहिए, इसे अनुभव करें, उससे सीख लें, उचित समय के लिए अपने आप को तैयार रखें, उसकी प्रतीक्षा करें क्योंकि समय हमारी प्रतीक्षा नहीं करता हमें सही समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है और जीवन में कुछ समस्याओं के समाधान समय अनुसार ही समाने आते हैं। जिसे कोई नहीं समझा सका उसे समय ही समझाता और सुलझाता है। लेकिन यह भी कठोर सत्य है कि हम सभी कुछ समय पर भी नहीं छोड़ सकते। हममें यह क्षमता होनी चाहिए कि हम अपने आप को समय के अनुसार ढाल पाने योग्य बना सकें।

ऐसा नहीं है किसी के पास समय कम है और किसी के पास अधिक है। वास्तव में ईश्वर ने सभी को समान समय प्रदान किया है वो ही 24 घण्टे। लेकिन यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह अपने समय का कैसे सदुपयोग करता है। वह अपने समय को किस प्रकार व्यवस्थित करता है। सही समय पर अपनी तैयारी का सही उपयोग करता है कि नहीं। ऐसा भी नहीं है कि परिस्थितियाँ और समय उसकी तैयारी पर निर्भर रहती हैं। कई बार तैयारी करने के उपरांत भी सफलता के लिए लम्बा इंतजार करना पड़ता है। और कई बार ऐसा भी होता है हम अपनी तैयारी का फल अतिशीघ्र मिल जाता है। लेकिन इसके लिए यह तो अवश्य है ही कि हम तैयार रहें क्योंकि यदि हमने उच्च शिक्षा व ज्ञान प्राप्त किया होता है तभी तो हम उस शिक्षा व ज्ञान से सम्बंधित प्रतिष्ठित पद को प्राप्त कर सकते हैं। समय भी उनका ही साथ देता है जो पूरे आत्मविश्वास व निष्ठा के साथ आने वाले समय का लाभ उठाने की आशा के साथ अपनी तैयारी करते हैं। समय का सही इस्तेमाल करने के लिए आवश्यक है कि हमें समय का सही प्रबंधन करना आना चाहिए। सही

\* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

प्रबंधन ही हमें सफलता के निकट ले जाता है और गलत प्रबंधन सफलता से दूर ले जाता है। वास्तव में समय का सही प्रबंधन हमारी सफलताओं की सम्भावना को बढ़ा देता है, इसीलिए एक जैसी योग्यता होने के बावजूद किसी को समय की औषधि कड़वी मिलती है तो किसी को मीठी। समय की औषधि यदि कड़वी मिलती है तो भी वह हमें कोई न कोई सीख अवश्य दे जाती है। जो लोग उससे सीख लेकर सुधार कर लेते हैं समय उन्हें कई बार दुबारा अवसर प्रदान कर देता है और जो लोग समय से सीख नहीं लेते समय और अवसर दोनों ही उनसे दूर होते जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम ये सोच कर चुपचाप न बैठे कि हमारा समय ही खराब है बल्कि उन स्वामियों को भी तलाश करें जिनके कारण हम समय का लाभ नहीं उठा पाए। संसार में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ महान सफलताओं को प्राप्त करने के लिए पहली ही बार सफलता नहीं मिली अपितु कई प्रयासों के उपरान्त व्यक्ति सफलता को प्राप्त करके प्रतिष्ठित शिखर पर पहुंच पाने में सफल हुआ है। जिसमें कोई संदेह नहीं कि इसके पीछे उसकी लगन, निष्ठा, संयम, समर्पण, शक्ति, विवेक व बुद्धि का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। कई बार यह प्रत्यक्ष रूप में समाज के समाने दिखाई देते हैं और कई बार यह प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देते। इसलिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति यदि अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है और उन्हें सफलता में बदलना चाहता है तो अपने पर विश्वास बनाए रखें, आत्मविश्वास बनाए रखें, जिसके लिए उसकी सकारात्मक सोच का बने रहना अत्यंत ही आवश्यक है क्योंकि सकारात्मक सोच ही उसे नकारात्मक कारगरता के वातावरण से दूर रखती है, उसके आत्मविश्वास में बाधाक नहीं बनने देती, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच ही विवेक को विस्तार देते हैं। जिसके फलस्वरूप ही व्यक्ति सही समय पर सही निर्णय लेने में सफलता प्राप्त करता है। सकारात्मक ऊर्जा को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को ध्यान व योग को अपनाना चाहिए। ध्यान व योग वह शास्त्र हैं जो व्यक्ति के जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार करते हैं, उसके मन, बुद्धि व तन को स्वस्थ रखने में सहायक होते हैं। जिससे उसमें विवेक और शक्ति के साथ-साथ संयम व साहस का विस्तार होता है विवेक, शक्ति, संयम, साहस ही व्यक्ति को उचित समय पर उचित निर्णय लेने में सहायता प्राप्त करते हैं। वास्तव में ये ही जीवन के प्रबंधन को स्थापित करने वाले वे बीज होते हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि जीवन रूपी वृक्ष पर किस प्रकार के फल लगेंगे और वह कितना अधिक समाजिक व भौतिक सुविधाओं से हरा-भरा होगा। इसलिए व्यक्ति को यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि वह भले ही समय को बदल पाने में पूर्णतया सक्षम न हो किन्तु इतना तो अपनेआप को सक्षम कर सकता है कि वह समय का उचित उपयोग करने के लिए अपने आप को सक्षम बना ले जैसे ही जैसे प्राकृतिक प्रकोप आने पर भी कुछ वृक्ष अडिग खड़े रहकर उसका सामना करने की क्षमता रखते हैं और हरे भरे रहते हुए फलों को प्रदान करते हैं क्योंकि इन वृक्षों की जड़ें इतनी गहरी व मजबूत होती हैं कि समय की मार का भी उन पर असर नहीं हो पाता। ध्यान और योग भी व्यक्ति के जीवन में उन गहरी मजबूत व ऊर्जा शक्ति के बीजों का कार्य करते हैं जो समय का सामना साहस व संयम से करने की सकारात्मक क्षमता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं इस लिए भले ही समय को बांध पाना हमारे वश में न हो लेकिन समय का सामना संयम, साहस व विवेक से करने की योग्यता तो हम में होनी ही चाहिए जिसके लिए हमें सज्ज और सज्ज रहना चाहिए क्योंकि यह भी सत्य है कि समय सदा एक सा नहीं रहता, समय को भी समय आने पर बदलना पड़ता है और वो ही समय मानव की विजय का सुअवसर होता है कहा भी गया है-

ना संघर्ष से हारा,  
ना साहस से हारा,  
ना संयम से हारा  
हारा तो हारा,  
में समय से हारा  
पर समय ना रहता एक समान,  
जिस दिन बदलेगा,  
में घू लूंगा आसमाना

□□□□

## आजादी के मायने

डॉ. तरुण\*

15 अगस्त की तारीख एक जश्न की तरह भारत में उम्मीद बनकर उभरी है। लेकिन इस तारीख को पाने के लिए, पाने नहीं अर्जित करने के लिये हमारे देशवासियों ने कितनी कुरबानियाँ दी हैं। आप सभी जानते हैं कि इस आजादी को हमने हासिल किया है यह खैरात में हमें नहीं मिली है और हमसे यह भी नहीं छिपा कि जब दुनिया गुलामी से आजाद हो रही थी हम गुलाम बनाये जा रहे थे। इस गुलामी का कारण भारत के भीतर मौजूद था।

ऐसा नहीं था कि आप में धन, बल और जज्बे की कमी थी लेकिन देखना होगा कि ये सब होते हुए भी हम कैसे बिखर गये और गुलामी के गर्त में चले गए। हमें समझना होगा कि जिसे हम मुल्क या देश के नाम से जानते हैं, यह भारत देश सिर्फ एक धरती का टुकड़ा नहीं है, बल्कि यह आपसे बना है। इसके हर एक चोले को रंगने के लिये हमारे क्रांतिकारियों ने अपने खून को पानी की तरह बहाने में संकोच नहीं किया।

स्वतंत्रता दिवस सिर्फ चार देशभक्ति गीत गाने का नाम नहीं है बल्कि स्वतंत्रता दिवस अपनी आजादी को और पुख्ता तरीके से हासिल करने का और उसका वर्तमान संदर्भों में विश्लेषण करने का दिन है और यह ध्यान रहे कि आपकी आजादी दूसरे की गुलामी का सबब न बनने पाए।

मैं यह महसूस करता हूँ कि किसी भी देश की आजादी उस देश की महिलाओं की आजाद ख्याली से जुदा नहीं होती। इंग्लैंड जैसा देश जो अपने को खूब आधुनिक और आजाद ख्याल होने का दंभ भरता था वो खुद अपने देश की महिलाओं को मताधिकार देने में संकोच करता रहा। हमें यह जानकर गौरवांविता होना चाहिये कि इस देश की आजादी में तब भी महिलाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था और न सिर्फ भाग लिया था बल्कि नेतृत्व करने में भी वे पीछे नहीं रही थीं।

जब-जब आजादी का दिन या वर्षगाँठ नजदीक आती है हम सबके भीतर का देशभक्त और अधिक सक्रिय हो जाता है। मसलन रेडियो, टीवी, न्यूज चैनल सब देशभक्ति के गीतों को सुनने-सुनाने लगते हैं। अच्छी बात है। पर दरअसल सबसे अच्छा क्या है, सबसे अच्छा तो यही है कि हम आजादी की वर्षगाँठ पर आजादी का पुनर्मूल्यांकन करें, हम जाँचें कि जिस आजादी की चाहत हमने की थी क्या यह वही आजादी है। अगर यह वही आजादी है जिसका स्वप्न हमने सत्तर साल पहले देखा था और जो वास्तव में सन् 1947 में साकार हुआ, क्या इसी आजादी की चाहत हमें थी। सच कहें तो आजादी हर मायने में खूबसूरत है पर जिस तरह की आजादी का स्वप्न महात्मा गाँधी और भगत सिंह ने देखा था यह वो आजादी नहीं। आजादी के मायने दरअसल हैं क्या और हमें इन्हें जानने की जरूरत आखिर क्यों है। हम अपनी आने वाली पीढ़ी में इस आजादी के महत्त्व को कैसे पहुँचाए।

आजाद सुबह में जब किसी को लिखना पड़े 'ये दाग-दाग उजाला ये शब गजीदा सहर वो इंतजार था जिसका ये वो सुबह तो नहीं।' या साहिर साहब ने जैसा लिखा 'ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है' इन गीतों के बरक्स हम भारत कुमार उर्फ मनोज

\* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

कुमार की पूरब पश्चिम के आदर्शवादी गीतों को भी ले सकते हैं और कह सकते हैं कि प्रीत ही यहाँ की रीत है। पर सच कहिए क्या ऐसा है? आजादी के इतने सालों बाद भी अंगर असमानता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, अपराध, गुंडागर्दी, माफियागिरी, भ्रुखमरी, अपने चरम पर है तो हम कैसे कहें कि हम आजाद हैं। सही है अब हम अंग्रेजों के गुलाम नहीं हैं। अब हम खुद अपने लोभ और लालच के गुलाम हैं।

आजादी के इतने सालों बाद भी आप स्त्रियों, अनुसूचित जातियों-जनजातियों, पिछड़ों को उनका वास्तविक हक नहीं दे सके हैं। ऐसा नहीं कि इस क्षेत्र में बिलकुल काम नहीं हुआ है लेकिन तब भी उस स्तर पर नहीं जिस स्तर पर होना चाहिए। आज भी अनाज सड़ जाता है पर भूखे तक नहीं पहुँचता।

हमें समझना होगा कि विकास की अवधारणा और विकास के सवाल दोनों जुदा चीजें हैं। बाँध बनाकर हम कह सकते हैं कि देखिये हमने कितना विकास किया कितने सारे गाँवों को सिंचाई के लिए पानी मिल जायगा, बिजली मिलेगी, फसलें लहलहाएंगी। लेकिन साथ ही ध्यान रखें कि कितने सारे गाँव डूब क्षेत्र में आ जायेंगे, और कितने सारे लोग विस्थापित होंगे। ऐसी आजादी किसे चाहिए थी। एक आजाद राष्ट्र अपने एक-एक नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा की गारंटी देता है। आप बताएं क्या ऐसा है।

अंगर ऐसा है तो सिर्फ एक महीने के अखबारों में गुमशुदा लड़कियों के रिकॉर्ड देखें, मैं पुरुषों और बच्चों की गुमशुदगी को छोड़ रहा हूँ। आप देखें लड़कियाँ गायब हो रहीं हैं। आप देखें ये लड़कियाँ ज्यादातर झुबुनी झोपड़ी कॉलोनी की होंगी गरीब परिवारों की होंगी, कम उम्र की होंगी। यह बात दिल्ली के विशेष संदर्भ में मैं कह रहा हूँ नंद नगरी और लगभग पूरा जमनापार, सुल्तानपुरी, सुंदर नगरी, जहाँगीरपुरी, न जाने कितने इलाकों पुलिस का पूर्वाग्रह इस मामले में बिलकुल स्पष्ट है अरे भाग गई होगी तो कैसे मिलेगी। अब आप देखें किसी आई.ए.एस. या नेता या किसी बड़े पद पर आसीन के यहाँ जब ऐसे गुमशुदगी की रिपोर्ट आती है तुरंत कार्यवाही होती है। ये कैसी आजादी है जहाँ वास्तव में हक और कर्तव्य की इतनी असमानता है। आप ही बताएँ क्या ऐसी आजादी की कामना महात्मा गाँधी, भगत सिंह या तिलक या और नेताओं ने की होगी। अब सोचिये जिस कीमत पर यह आजादी हमने पाई विश्राजन और सांप्रदायिकता। सांप्रदायिकता का वो जहर आज भी विद्यमान नहीं है क्या। इन संदर्भों को खोले बिना हम आजादी के मायनो को कैसे जानेंगे। आजादी के मायने इन सवालों से जुदा होकर क्या सिर्फ जश्न मनाने में निहित नहीं हो सकते हैं।

